दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): ANKIT MISHRA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ☐ नहीं ☐

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): IV (22/01/2019)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2019]: ☐☐☐☐☐☐☐

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ankit

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) कला केवल उपकरण मात्र है, कला जीवन के लिये और उसकी पूर्ति में ही है। जीवन से विरक्ति और जीवन के उपकरण से अनुराग का क्या अर्थ?... किसी का जीवन अन्य की तृप्ति और जीवन की पूर्ति का साधन मात्र होकर रह जाय? वह जीवन सृष्टि में अपनी सार्थकता से सृष्टि में नारी के जीवन की मौलिक सार्थकता से वंचित रह जाय? जैसे सेवा के साधन दास का जीवन!...भयंकर प्रवंचना!

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश 'दिव्या' नामक उपन्यास से लिया गया है। यहाँ मूर्ति निर्माण के दौरान उसके शरीर व निचले भाग की अनुपस्थिति तथा सिर्फ मध्य भाग की उपस्थिति के संदर्भ में मूर्तिकार (मारूत) व्याख्या करता है

व्याख्या → उपरोक्त पंक्तियों कला, साधन, सृष्टि आदि की व्याख्या जीवन के संदर्भ में की गई है किस प्रकार समस्त चीजों, यथा कला, साधन आदि की उपयोगिता जीवन को सुखमय बनाने के लिए ही है, इसकी बात यहां की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौंदर्य — ~~उपरोक्त पंक्तियों~~

(1) नारी को सृष्टि का अँग तथा सृजन का माध्यम मानकर प्रकृति में उसके महत्व को स्थापित किया गया है

(2) इहलौकिक जीवन के ऊपर वर्तमान जीवन के महत्व को स्थापित किया है।

(3) पंक्तियों के मूल भाव में 'पावक दर्शन' का संदेश स्पष्ट है।

(4) नारी को 'वस्तु' के स्थान पर 'शक्ति' के रूप में स्थान

(5) पितृसत्तात्मक समाज के ढाँचे में स्त्री का बराबर का स्थान और योगदान स्थापित करने का प्रयास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग — उपरोक्त गद्यांश मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' नामक नाटक से उद्धृत है।

व्याख्या — यहाँ कालिदास राजमहल जाने को लेकर अपनी अनिच्छा प्रकट करते हुए यह वर्णन करते हैं कि उनकी साहित्य-सृजन की क्षमता का आधार प्रकृति है। राजमहल में प्रकृति के अभाव में वो साहित्य सृजन भी नहीं कर पाएंगे और यदि करेंगे तो उसमें वो उत्कृष्टता नहीं होगी।

रचनात्मक सौंदर्य —

(1) प्रकृति के महत्व को स्थापित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

किया गया है।

(2) सर्जन सृजन के लिए सहजता और नैसर्गिकता के महत्व का प्रतिपादन / ~~[illegible]~~ यह 'अज्ञेय' के 'असाध्यवीणा' की मूल ~~से~~ संवेदना के समान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रसंग - उपरोक्त गद्यांश

मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' नामक नाटक से लिया गया है। यहाँ उज्जैनी से वापस लौटकर कालिदास अपनी प्रेमिका से संवाद कर रहे हैं।

व्याख्या — कालिदास कहते हैं कि उज्जैनी के राजमहल में रहकर उनका मूल व्यक्तित्व नष्ट हो गया है। वह उनका मूल व्यक्तित्व इतना बदल चुका है कि उन्हें पुराने कालिदास के रूप में पहचानना संभव ही नहीं है। वह इतना बदल चुके हैं कि स्वयं कालिदास भी स्वयं को नहीं पहचानते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचनात्मक सौंदर्य —

(1) 'व्यक्तित्व विघटन' कालिदास के व्यक्तित्व के माध्यम से शोभनीय बन पड़ा है।

(2) मनुष्य की सहजता की लुप्तता और उसका परिणाम भी अद्भुत है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश हिंदी साहित्यकार आ० रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित "कविता क्या है?" नामक निबंध से लीगई है जिनका संकलन "चिंतामणि" नामक पुस्तक में किया गया है।

व्याख्या — उपरोक्त पंक्तियों में आ० शुक्ल ने कविता की रीतिकालीन मानसिकता से इतर बेहद गंभीर व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने कविता को सिर्फ मनोरंजन का साधन न मानकर एक ऐसी विधा माना है जो मनुष्य के हृदय का प्रकृत से सामंजस्य स्थापित करती है। कविता मनुष्य का मानसिक विस्तार करती है और उसके मनुष्यत्व गुणों को उच्चता पर ले जाती है। कविता वह साधन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है जिससे मनुष्य हृदय ~~संकी~~ संकीर्णता से बाहर निकलकर विस्तार की स्थिति में आता है।

स्चनात्मक सौंदर्य —

(1) कविता को रीतिकालीन व्यारम्भा से की उपयोगिता मुक्त किया है

(2) गंभीर और व्यापक चिंतन दृष्टम

(3) मनुष्य हृदय को व्यापकता प्रदान करने तथा सहजता की स्थिति प्राप्त करने में कविता की भूमिका स्थापित की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा क़रार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश मार्क्सवादी समीक्षा के पितामह, डॉ रामविलास शर्मा के 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' नामक निबंध से उद्धृत है।

व्याख्या → गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य कर्म को समीक्षकों के एक वर्ग के द्वारा हमेशा नकारात्मक मूल्यांकन किया गया। इसी के जवाब में डा रामविलास शर्मा यह स्थापित करते हैं कि जिन आदिवासियों को मुगल काल में जानवर समझ कर उनका शिकार किया जाता था तथा जिंदा पकड़े जाने पर उन्हें गुलाम बनाकर काबुल में बेच दिया जाता था तथा अंग्रेजों ने जिनके काम को ही गैर कानूनी घोषित कर दिया था, उनके बारे में तुलसीदास के लेखन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को पढ़कर उनकी प्रगतिशीलता का पता चलता है। रामचरित मानस में निषाद राज को राम का मित्र दिखाना, तुलसीदास की प्रगतिशीलता ही है।

स्पनात्मक सौंदर्य

(1) सामान्यतः मार्क्सवादी समीक्षकों ने तुलसीदास जी को आड़े हाथों ही लिया है, परंतु डॉ रामविलास शर्मा ने इस तुलसी-साहित्य की इतनी सकारात्मक व्याख्या, अद्भुत है।

(2) मुगल, ब्रिटिश और तुलसीदास की तुलना के लिए इतिहास की घटनाओं का प्रयोग लेखक की इतिहास-दृष्टि का परिचायक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान उपन्यास 1936 में प्रेमचंद जी द्वारा लिखा गया। यह वो दौर था जब भारत की लगभग पूरी आबादी गाँवों में बसती है। शहरों की संख्या और उनका आकार दोनो ही कम थे। उनमें बसने वाले लोगों की संख्या भी ग्रामीण आबादी की तुलना में नगण्य थी।

ऐसे में गोदान को देशव्यापी उपन्यास बनाने के लिए शहरी कथा का वर्णन प्रथम दृष्ट्या बहुत आवश्यक नहीं प्रतीत होता है। परंतु प्रेमचंद ने ऐसा किया है।

वस्तुतः थोड़ी संख्या ही सही, परंतु आबादी शहरों में रहती जरूर थी। अतः उसका वर्णन भी आवश्यक था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरा, शहर और गाँव पूरी तरह से एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते थे। यथा, गाँव का किसान जमींदारों के छत्रछाया में रहता था जो कि स्वयं शहरों में रहता था। ऐसे में शहरी कथा का वर्णन आवश्यक हो जाता है।

यह वह दौर भी था जब खेती-किसानी छोड़कर नयी पीढ़ी रोजगार के नए अवसर में शहरों की ओर पलायन करना शुरू कर चुकी थी। गोबर का शहर में जाकर चाट की दुकान लगाना इसी [illegible] को दर्शाता है।

गोदान सिर्फ गाँव या शहर की कथा ही न होकर सामाजिक विद्रूपताओं का भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेखा-जोखा प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है। सामाजिक विद्रूपताओं का शहरों और गाँवों दोनों से तल्लुक होता है।

उसके नारी-विमर्श को प्रस्तुत करने के लिए भी शहरी कथा अपरिहार्य थी, क्यों ~~किंतु~~ उस काल को ध्यान में रखते हुए नारी-विमर्श को ग्रामीण कथा में समाहित करना संभव नहीं था।

शहरी मध्यवर्ग की स्थिति, जिसमें वो 'स्पेकुलेशन' से 'लाखों का वारा-न्यारा' कर देते थे ~~उस~~ जबकि ग्रामीण किसान कड़ी मेहनत के बावजूद बदहाली को अभिशप्त था उस समय का कड़वा सच था। इसे दर्शाने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

के लिए शहरी कथा का होना आवश्यक था।

अतः यह कह सकते हैं कि यद्यपि गोदान मूलतः ग्रामीण परिवेश की कथा है तथापि तत्कालीन ~~[illegible]~~ समयानुसार उसमें कुछ शहरी अंश की आवश्यकता थी और इसी लिए प्रेमचंद ने इसे गोदान में शामिल किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास किस रूप में उपस्थित है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' उपन्यास ऐतिहासिक परिवेश में लिखा गया आधुनिक समय की समस्या को उजागर करने वाला उपन्यास है। इसकी पृष्ठभूमि बौद्धकाल की है।

वस्तुतः दिव्या में इतिहास है ही नहीं। पूरे उपन्यास में सिर्फ चार पात्र ऐसे हैं जिनका इतिहास में उल्लेख मिलता है जैसे कि ~~पतंजलि~~ पाणिनी। और यह पात्र भी सीधे तौर पर उपन्यास में आभित नहीं हैं, सिर्फ इनके नामों का उल्लेख हुआ है।

चूंकि 'दिव्या' जिस ~~समय~~ कालखण्ड की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है उसे प्रामाणिक बनाने के लिए इन ऐतिहासिक व्यक्तियों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

का उल्लेख आवश्यक था

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया आधुनिक समय का तथा आधुनिक समस्या को व्यक्त करने वाला नाटक है। 'कालिदास' आदि व्यक्तियों तथा 'उज्जैन' आदि स्थानों का प्रयोग ऐतिहासिकता की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए किया गया है।

इसके अतिरिक्त घटना और पात्र सिर्फ नाटकार की कल्पना ही है।

अतः 'आषाढ़ का एक दिन' इतिहास और कल्पना का समन्वय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भारत-दुर्दशा' भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित एक नाटक है। यह 'त्रासदी' है या नहीं इसका निर्धारण त्रासदी के तत्वों और 'भारत-दुर्दशा' की संवेदना के आधार पर किया जा सकता है।

मूलतः त्रासदी पाश्चिमी नाट्य परंपरा की देन है जिसमें नायक अभिजात वर्ग से होता है, धीरोदात्त होता है तथा शत्रु से संघर्ष में विजयी होने की स्थिति में होता है। परंतु एक छोटी-सी गलती की वजह से वह पराजित होता है और मृत्यु को प्राप्त होता है ऐसा प्रदर्शित करके दर्शकों को विरेचन की स्थिति में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पहुँचाने का प्रयास किया जाता है।

यदि 'भारत दुर्दशा' का इस आधार पर मूल्यांकन करें तो नाटक का नायक 'भारत' अत्यंत ही कमजोर और भीरु है। वह दुश्मन की आवाज सुनकर ही बेहोश हो जाता है।

पूरे नाटक के आधे से ज्यादा हिस्से में भारत बेहोशी की हालत में है।

वह अभिजात वर्ग का भी नहीं है। उसके कपड़े फटे-चिटे तथा मलीन हैं।

शत्रु से संघर्ष की स्थिति में तो वह है हि नहीं तथा ऐसी कोई परिस्थिति नहीं बनती जहाँ वह कोई गलती नैतिकतावश करे, और पराजित हो जाए। वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो प्रारंभ से ही पराजय की स्थिति में है।

उसकी दशा दिशा में विवेचन की स्थिति उत्पन्न करने में भी सक्षम नहीं है।

अतः इन मापदंडों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि "भारत-इंडिया" त्रासदी नहीं है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

'कफन' मुंशी प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है। इस कहानी की उत्कृष्टता का प्रमाण इसी बात से चलता है कि एक वर्ग इसे प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानी मानता है तो दूसरा इसे दलित विरोधी कहकर इसकी भर्त्सना करता है।

यह विवाद, कि "क्या यह कहानी दलित विरोधी है?" मूलतः इसकी संवेदना की वजह से ही है।

कहानी दो ऐसे दलित पिता-पुत्र की है जिनके घर की बहू का देहावसान प्रसवपीड़ा की वजह से हो जाता है। मृत्यु के बाद के कर्मकाण्डों के लिए आवश्यक धन जुटा पाना इन पिता-पुत्र के बस की बात नहीं है, क्योंकि इनकी आर्थिक हालत का अनुमान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी से लगाया जा सकता है कि ~~इनमें~~ इन्हें आखिरी बार पेट भर खाना बीस साल पहले मिला था, वो भी 'ठाकुर' की दावत में।

ऐसे में गाँव के लोग कफ़न के लिए धन एकत्रित करते हैं और 'कफ़न' लेने के लिए दोनों को बाजार भेजते हैं जहाँ वो इस धन का उपभोग खाना खाने और शराब पीने में खर्च कर दिया।

कुछ जगहों पर इन दोनों पिता पुत्र के लिए जातिसूचक शब्द 'चमार' का प्रयोग भी किया गया है।

इन दो आधारों पर 'कफ़न' पर दलित विरोधी होने का आरोप लगता है।

परंतु, कफ़न अपनी मूल संवेदना में दलित-विरोधी न होकर दलितों की खराब सामाजिक-आर्थिक स्थिति का लेखा जोखा है। यह समाज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की 'सतही' संवेदना का भी परिचायक है। वह समाज जहाँ कोई व्यक्ति बीस साल से भरपेट खाना न खा पाया हो उसके घर में होने वाले कर्मकाण्ड के लिए धन एकत्रित कर देते हैं — यह समाज के चरित्र पर प्रेमचंद का तमाचा है।

मुख्य पात्र जब होटल में भरपेट खाना खा लेते हैं तो बचा हुआ खाना, भिखारी को देते हैं। इससे प्रेमचंद ने यह दर्शाया है कि बड़ी-2 बातें, दानवीरता, संवेदनशीलता आदि पेट भरने के बाद ही आती है चूँकि दलित समाज का बड़ा हिस्सा इतना सक्षम नहीं था ~~[illegible]~~ तो उनके क्रियाकलापों को क्रूर और अशिष्ट मान लिया जाता था।

अतः इस कहानी को 'दलित-विरोधी' कहना सच्चाई को झुठलाने के समान है। वस्तुतः यह कहानी 'दलित-विरोधी' समाज पर एक तंज है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 15

'महाभोज' उस भोज को कहा जाता है जो किसी की मृत्यु के उपरांत किया जाता है।

प्रश्न यह है कि आखिर यह भोज किसकी मृत्यु का? — आग में झोंक दिए गए दलित बस्ती के लोगों का, या इसके विरोध में स्वर मुखर करने वाले युवक का? —

वस्तुतः यह 'महाभोज' भारतीय लोकतंत्र की मृत्यु का भोज है। आजादी के बाद किसी तरह से शासन अंग्रेजों के हाथ से भारतीय उच्च वर्गों के हाथ में चला गया और निम्न वर्गों की स्थिति जस-की-तस बनी रही, "स्वतंत्रता और समानता" के बड़े-2 दावे किस तरह से सिर्फ दावे ही रह गए, यह पूरे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यास में पल-पल दिखलाई देता है। वस्तुतः यह स्थिति 'लोकतंत्र' की मृत्यु के समान थी और यह 'महाभोज' उसी मृत्यु का भोज है।

अन्य प्रश्न, कि यदि इस उपन्यास का नाम 'महाभोज' नहीं होता तो क्या होता? — जिस तरह की परिस्थितियाँ उपन्यास में हैं उसके आधार पर कई अन्य नाम भी सोचे जा सकते थे जैसे 'लोकतंत्र की मृत्यु', 'दलित-दशा' आदि। परंतु इनमें से कोई भी नाम उपन्यास की संवेदना को उस गहराई और व्यापकता के साथ समाहित नहीं कर पाता, जितना 'महाभोज' नाम करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि लेखिका ने नामकरण के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

लिए एक लंबा बौद्धिक चिंतन प्रयास किया होगा।
अतः 'महाभोज' नाम सर्वथा उपयुक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ। ईश्वर वह दिन जल्द लाए। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

संदर्भ-प्रसंग — उपरोक्त गद्यांश हिंदी उपन्यास के युग-पुरुष 'प्रेमचंद' के गोदान नामक उपन्यास से लिया गया है। यहाँ होरी और जमींदार साहब के बीच की वार्तालाप का प्रसंग है जहाँ जमींदार साहब जमींदारों के बचते रसूख की बात करते हैं।

व्याख्या → जमींदार साहब ऐसा पूर्वानुमान लगाते हैं कि आने वाले समय में जमींदार वर्ग का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। ऐसा वो तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर कह रहे हैं।

जमींदार साहब ऐसा दर्शाते हैं कि जैसे वो जमींदारी समाप्त होने पर वे बहुत खुश होंगे क्योंकि इससे वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'परम लक्ष्य' के अधिक नजदीक पहुँच सकेंगे। वो कहते हैं कि जमींदारी उनके लिए एक अभिशाप की तरह है जो उनके 'परम लक्ष्य' की प्राप्ति में बाधक बन रही है।

रचनात्मक सौंदर्य —

(1) शोषक वर्ग (जमींदार) द्वारा स्वयं को परिस्थितियों का दास के रूप में चित्रण बेहद खूबसूरत है।

(2) शोषित वर्ग (होरी किसान) के समक्ष 'ईश्वर', 'अंतिम लक्ष्य' आदि बातों को करना ~~'मिथ्या चेतना'~~ मार्क्सवादी विचारों के 'मिथ्या-चेतना' के समान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भद्रे जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग - उपरोक्त गद्यांश 'दिव्या' उपन्यास से उद्धृत है।

व्याख्या

स्पष्टीकरण

~~(1) जीवन~~

(1) जीवन की गतिशीलता का सिद्धांत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सँदर्भ-प्रसंग - उपरोक्त गद्यांश आ॰ शुक्ल द्वारा लिखित 'कविता क्या है' नामक निबंध से उद्धृत हैं। यहाँ आ॰ शुक्ल कविता के बारे में अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या - कविता वस्तुओं के सौंदर्य को दर्शाती है। परंतु, ऐसा नहीं है कि वो सिर्फ वस्तुओं के सौंदर्य को ही दर्शाती है। अपितु उन गुणों के सौंदर्य को भी दर्शाती है जिन्हें आँखों से देखा नहीं जा सकता। यथा उदारता, वीरता जैसे गुण ~~~~ सिर्फ अनुभव किए जा सकते हैं, परंतु कविता कर्म और मनोवृत्ति परक इन गुणों ~~~~ ~~~~ का सौंदर्य भी मन में उकेरने में सक्षम होती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

स्पनात्मक सौंदर्य

(1) कविता की रीतिकालीन परम्परा से तोड़कर 'लोकवादी' परम्परा

(2) लेखक की गंभीर चिंतन क्षमता का परिचायक

(3) 'सौंदर्य' की उदात्त परम्परा

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा।... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या 'मैला आँचल' को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास माना जा सकता है? तार्किक उत्तर लिखिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' एक ऐसा उपन्यास है जिसने न सिर्फ एक विशेष परंपरा की शुरुआत की, बल्कि उसे उत्कृष्टता के शिखर पर भी पहुंचा दिया।

'मैला आँचल' 1950 के दशक का उपन्यास है। इसके पहले भी कई ऐसे उपन्यास लिखे गए थे जिनमें आँचलिकता का अनुपात काफी ज्यादा था परंतु यह पहला ऐसा प्रयास था जहाँ सिर्फ आँचलिकता का अनुपात ही ज्यादा नहीं है बल्कि आँचल ही नायक बन गया है।

आँचल के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू दोनों ही इसमें खूबसूरती से उकेरे गए हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ग्रामीण परिवेश में पाए जाने वाले हर दृश्य — बात-बात पर उत्सव का आयोजन; जातिगत संघर्ष; आदिवासियों की स्थिति; महिलाओं की स्थिति; मठों का चरित्र, राजनीतिक पार्टियों का चरित्र ~~प्रगतिशीलता का~~ आदि कूट-2 कर भरे हुए हैं।

डॉ प्रशांत के प्रगतिशील कामों का विरोध; डायन-चुड़ैल आदि पर विश्वास तथा कई अन्य विद्रूपताओं के साथ आँचल के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन बेहद खूबसूरत है।

'मैला आँचल' उपन्यास में लेखक ने आँचलिकता को नायकत्व के जिस स्तर पर पहुँचा दिया है, वैसा उसके बाद के 70 वर्षों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मैं अब तक कोई लेखक नहीं कर सका है।

यहाँ तक की खुद फणीश्वरनाथ रेणु की अपने बाद के ~~अ~~ अन्य आँचलिक उपन्यासों में 'मैला आँचल' का अनुसरण करते हुए ही नजर आते हैं।

अतः इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि मैला आँचल हिंदी साहित्य परंपरा का सर्वश्रेष्ठ आँचलिक उपन्यास है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की संवेदना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'ईदगाह' बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। किस तरह असमय जिम्मेदारियों का भाव बाल मन को बचपन का खेलकूद छोड़कर घरेलू कामकाज के बारे में सोचने को विवश कर देती है, इसकी प्रस्तुति है 'ईदगाह'

माता-पिता की असमय मृत्यु तथा दादी 'अमीना' के रोटियाँ बनाते समय जलने वाले हाथों का प्रभाव छोटे बच्चे 'हामिद' पर खिलौनों तथा खाद्य पदार्थों से अधिक है। ईदगाह जाने का उत्साह, मेले में अनेक वस्तुएँ देखकर उन्हें खरीदने का मन, झूले झूलने की इच्छा और रेवड़ियों,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को चखने की अभिलाषा हामिद के मन में भी है, परंतु दादी अमीना के दर्द उसके अपनी मन की इच्छाओं पर भारी पड़ते हैं।

यह स्थिति कमोबेश हर उस बच्चे की स्थिति है जिस पर असमय जिम्मेदारियाँ आ गई हों।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'देवसेना' हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? सहमति या असहमति के कारण बताइए। 15

'देवसेना' हिन्दी के महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक की पात्र है।

जयशंकर प्रसाद के नारी पात्र हमेशा ही अत्यंत प्रभावी होते हैं। यह प्रभाव सिर्फ प्रसाद के नाटकों में ही नहीं अपितु उपन्यास तथा कहानियों में भी है। 'देवसेना' की उसी कड़ी का एक हिस्सा है।

स्कंदगुप्त के प्रति देवसेना का प्रेम तथा राष्ट्रहित में, यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्कंदगुप्त राष्ट्रनिर्माण तथा राष्ट्ररक्षा के कार्य से विचलित न हो, देवसेना ने अपने वैयक्तिक प्रेम को अलौकिक प्रेम में

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परिवर्तित किया।
स्कंदगुप्त की अनुपस्थिति
तथा गुप्त साम्राज्य पर आए संकट
की स्थिति में, देवसेना, महामात्य
के साथ मिलकर पत्र एकत्रित
करती है। स्कंदगुप्त की वापसी
पर जब उसका स्कंदगुप्त से
मिलन लगभग ~~हुआ~~ सुनिश्चित ही
हो रहता है तब वह स्कंदगुप्त
को राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित
करती है तथा अपने प्रेम का
बलिदान देती है।

सेवा, बलिदान का भाव, तथा
प्रेम का अलौकिक स्वरूप आदि
ऐसी विशिष्टताएँ हैं जो देवसेना
को हिंदी नाट्य परंपरा का
अविस्मरणीय चरित्र बनाती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation